BULLETIN – RESHAM KIT PALAN YA SHERICULTURE

विस्तृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें ।

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा

जिला - कबीरधाम (छ.ग.)

फोन नं. :- 07741-299124

Website : www. kvkkawardha.org

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

भाकृअनुप
ICAR

रेशम कीट पालन या सेरीकल्चर

श्रीमती स्वाति शर्मा

डॉ. बी.पी. त्रिपाठी || कु. मनीषा खापर्डे || डॉ. नूतन रामटेके

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा

जिला - कबीरधाम (छ.ग.)

2015

BULLETIN – RESHAM KIT PALAN YA SHERICULTURE

रेशम कीट पालन या सेरीकल्चर

रेशम या सिल्क जो सबसे अच्छा धागा माना जाता है रेशम कीट की इल्ली की ग्रंथियों से उत्पन्न लार से बनता है। यह लार तरल रूप में निकलती है, तथा वायु के संपर्क में आते ही पक्के धागे में परिवर्तित हो जाती है। शंखी अवस्था में आने के पूर्व इस कीट की इल्ली अपनी लार से धागा बनाकर शंखी की सुरक्षा हेतु कोया या कोकून बनाती है, इसी कोकून से रेशम बनता है, रेशम कीट का पालन, कोयों का एकत्रण तथा उनसे रेशमी धागा प्राप्त करने की किया को सेरीकल्चर या रेशम कीट पालन कहते हैं।

महत्व – रेशम कीट मनुष्य के लिए काफी लाभदायक है, रेशम से मनुष्य को कपड़ा मिलता है। वस्त्रो के अतिरिक्त युद्ध में भी इसका महत्व है, क्योंकि इससे हवाई छतरियां (पैराशूट) बनायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त टसर सिल्क मोथ के कृमिकोष से तेल भी निकाला जाता है, जिसकी औषधियां अत्यधिक उपयोगी होती है। रेशम धागे की उपयोगिता तथा रेशम कीट से सर्वप्रथम रेशम चीन में ज्ञात किया गया। भारत में इस उद्योग की विधिवत शुरूआत 1934 से हुई और इसी वर्ष इम्पीरियल सेरीकल्चर कमेटी की स्थापना की गई।

रेशम कीट के विभिन्न प्रकार – शहतूत के रेशम कीट के अतिरिक्त और भी निम्नलिखित रेशम कीट की जातियां है, इनमें से कुछ पालित–अर्धपालित तथा जंगली है, इनका संक्षिप्त वर्णन अग्रलिखित है।

1. शहतुत का रेशम कीट (बाम्बेक्स मोरी) – यह रेशम कीट हमारे देश में अधिकतर पाला जाता है, इसकी सूंडी शहतूत की पत्तियां खाती है। इसके कोये का रंग सफेद होता है, तथा इनसे मिलने वाला रेशम उत्तम किस्म का होता है।
2. टसर रेशम कीट (एन्थेरिया असामा) – यह कीट साल, बेर, आसान, अर्जून आदि की पत्तियां खाता है, यह अर्धपालित कीट है, इसकी सूंडी हल्का भूरा तथा पीला कोया बनाती है जो कि वृक्षों पर डण्ठल द्वारा लटका रहता है। इसका पूरा धागा उधेड़ कर लपेट दिया जाता है, जिससे अच्छे प्रकार का रेशम प्राप्त होता है। इस जाति का कोया सफेद रंग का और सख्त होता है।
3. मूंगा रेशम कीट (एन्थेरिया असामा) – यह अर्धपालित कीट होता है, जिसकी सूंडी सिनमोन, मैचलिस, एवं स्वालू आदि पौधों की पत्तियां खाती है, इसके कोये का रंग दूधिया अथवा पीले गुलाबी रंग का होता है, इससे निकलने वाले रेशम को मूंगा कहते हैं।
4. ऐरी रेशम कीट (फिलोसेमिया रिसिनी) – इसकी सूंडी अरंडी तथा कसेरू की पत्तियां खाती है, इससे प्राप्त होने वाले रेशम ईंट जैसे लाल रंग का अथवा सफेद होता है। इस रेशम में सबसे अधिक कठिनाई यह है, कि इसे पूरे धागे के रूप में नहीं उधेड़ा जा सकता है, बल्कि यह छोटे–छोटे टुकड़ो के रूप में निकलता है, इसे साफ करके काता जाता है, अतः यह घटिया किस्म का होता है, यह कीट पाला भी जाता है।

रेशम कीट के रोग –

a. पेब्राइन रोग – यह रोग नोसेमा बाम्बेसिस नामक प्रोटोजोआ द्वारा फैलता है। इस रोग का आक्रमण सूंडियो की चौथी तथा पांचवी अवस्था पर अधिक होता है। सूंडी के पिछले निम्नतल पर गहरे भूरे धब्बे प्रकट होते हैं, और वह सिकुड़ने लगती है। ग्रसित सूंडी निष्क्रीय हो जाती है, तथा शंखी बनने के पूर्व ही मर जाती है।

नियंत्रण –

1. बीमारी रहित अंडो तथा मादा का प्रयोग करना चाहिए।
2. कीट पालने के कमरे, प्रयोग होने वाले यंत्रों आदि को रोगाणु रहित कर लेना चाहिए।
3. ग्रसित कीटों को जलाकर नष्ट कर देना चाहिए।
4. पालक कक्ष तथा उपकरणों को 5 प्रतिशत फार्मेलिन या ब्लीचिंग पाउडर से उपचारित करें।

b. लेचेरी रोग – यह रोग सूंडियों का प्रमुख रोग है, जो बेसीलस थुरिंजिएन्सिस नामक बैक्टीरिया द्वारा होता है , इसके अतिरिक्त अन्य जीवाणुओं द्वारा भी यह रोग होता है, रोग से ग्रसित सूंडी भोजन करना बंद कर देती है, तथा सुस्त हो जाती है। उसके शरीर से तरल पदार्थ निकलता है, शरीर कोमल तथा रंगहीन होकर बाद में काला पड़ जाता है।

नियंत्रण–

1. यह संक्रामक रोग है, अतः साफ सफाई का विशेष ध्यान दें।
2. 2 प्रतिशत फार्मेलिन से कमरे तथा उपकरणों को उपचारित करें।

c. ग्रेसरी रोग – यह विषाणु द्वारा फैलता है, इस विषाणु को बोरीलिया वायरस कहा जाता है, यह वायरस सूंडियों के रक्त को दूषित कर पीलिया फैलाता है, रोग के आक्रमण के एक सप्ताह बाद सूंडियां पीली पड़ने लगती हैं, तथा भोजन करना छोड़ देती हैं, और त्वचा फटने लगती है, फटे स्थानों से मवाद या पस निकलने लगता है।

नियंत्रण –

1. तापक्रम नियंत्रित रखा जाये तथा लारवा को घाव मुक्त रखा जाये।
2. ग्रसित सूंडियो को सावधानी से हटाकर नष्ट कर दें।
3. तस्तरियों एवं उपकरणों को 30 प्रतिशत ट्राइक्लोरो एसिटिक एसिड में 15 मिनट रखकर पानी से धोकर साफ करना चाहिए।

d. मस्कार्डीन रोग – यह एक फफूंदजनित रोग है। यह रोग बोवेरिया बेसियाना नामक फफूंद से फैलता है। इस रोग से ग्रसित सूंडियां निष्क्रीय हो जाती हैं, तथा उनके शरीर में ऐंठन आ जाती है। मृत्यु पूर्व संपूर्ण शरीर सफेद स्पोर्स से ढंक जाता है।

नियंत्रण –

1. पालक कक्ष तथा उपकरणों को 2–5 प्रतिशत फार्मेलिन घोल से उपचारित कर संक्रमण रहित कर लें।
2. ग्रसित सूंडियों को पकड़कर जला देना चाहिए।
3. वर्षाकाल में कमरे की फर्श पर चूने का भुरकाव करें। जिससे आर्द्रता कम हो जाती है।
4. अत्यधिक संक्रमण होने से पूर्व ही कमरे में गंधक जलाकर धूमण करना चाहिए।